اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. (अय ह़बीबे मुकर्रम !) आप वोह किताब पढ़ कर सुनाइये जो आप की तरफ़ (ब.ज़रीए) वह़ी भेजी गई है, और नमाज़ क़ाइम कीजिए, बेशक नमाज़ बेह़याई और बुराई से रोकती है, और वाक़ई अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा है, और अल्लाह उन (कामों) को जानता है जो तुम करते हो।

وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. और (अय मोमिनो !) अह्ले किताब से न झगड़ा करो मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतर हो सिवाए उन लोगों के जिन्हों ने उन में से ज़ुल्म किया, और (उन से) केह दो कि हम इस (किताब) पर ईमान लाए (हैं) जो हमारी तरफ़ उतारी गई (है) और जो तुम्हारी तरफ़ उतारी गई थी और हमारा मा'बूद और तुम्हारा मा'बूद एक ही है और हम उसी के फ़रमां बरदार हैं।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. और इसी तरह़ हम ने आप की तरफ़ किताब उतारी, तो जिन (ह़क़शनास) लोगों को हम ने (पहले से) किताब अ़ता कर रखी थी वोह इस (किताब) पर ईमान लाते हैं, और उन (अह्ले मक्का) में से (भी) ऐसे हैं जो इस पर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों का इन्कार काफ़िरों के सिवा कोई नहीं करता।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. और (अय ह़बीब !) इस से पहले आप कोई किताब नहीं पढ़ा करते थे और न ही आप उसे अपने हाथ से लिखते थे वरना अह्ले बातिल उसी वक़्त ज़रूर शक में पड़ जाते।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. बल्कि वोह (क़ुरआन ही की) वाज़ेह़ आयतें हैं जो उन लोगों के सीनों में (मह़फ़ूज़) हैं जिन्हें (सह़ीह़) इ़ल्म अ़ता किया गया है, और ज़ालिमों के सिवा हमारी आयतों का कोई इन्कार नहीं करता।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ
وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۵۰﴾

50. और कुफ़्फ़ार केहते हैं कि उन पर (या'नी नबिय्ये अकरम ﷺ पर) उन के रब की तरफ़ से निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं, आप फ़रमा दीजिए कि निशानियां तो अल्लाह ही के पास हैं, और मैं तो महज़ सरीह़ डर सुनाने वाला हूं।

اَوَ لَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۵۱﴾ ع ۵

51. क्या उन के लिए येह (निशानी) काफ़ी नहीं है कि हम ने आप पर (वोह) किताब नाज़िल फ़रमाई है जो उन पर पढ़ी जाती है (या हमेशा पढ़ी जाती रहेगी), बेशक इस (किताब) में रह़मत और नसीह़त है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا
بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۵۲﴾

52. आप फ़रमा दीजिए : मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही गवाह काफ़ी है। वोह जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब का ह़ाल) जानता है, और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और अल्लाह का इन्कार किया वोही नुक़्सान उठानेवाले हैं।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ
اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَ
لَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۳﴾

53. और येह लोग आप से अ़ज़ाब में जल्दी चाहते हैं, और अगर (अ़ज़ाब का) वक़्त मुकर्रर न होता, तो उन पर अ़ज़ाब आ चुका होता, और वोह (अ़ज़ाब या वक़्ते अ़ज़ाब) ज़रूर उन्हें अचानक आ पहुंचेगा और उन्हें ख़बर भी न होगी।

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ اِنَّ
جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۙ﴿۵۴﴾

54. येह लोग आप से अ़ज़ाब जल्द तलब करते हैं, और बेशक दोज़ख़ काफ़िरों को घेर लेने वाली है।

يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ
مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۵﴾

55. जिस दिन अ़ज़ाब उन्हें उन के ऊपर से और उन के पांव के नीचे से ढांप लेगा तो इरशाद होगा : तुम उन कामों का मज़ा चखो जो तुम करते थे।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ
وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾

56. ऐ मेरे बन्दो जो ईमान ले आए हो बेशक मेरी ज़मीन कुशादह है सो तुम मेरी ही इबादत करो।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ
إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ٥٧

57. हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौटाए जाओगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا
نِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِينَ ٥٨

58. और जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे हम उन्हें ज़रूर जन्नत के बालाई महल्लात में जगह देंगे जिन के नीचे से नहरें बेह रही होंगी वोह उन में हमेशा रहेंगे, (येह) अ़मले (सालेह़) करने वालों का क्या ही अच्छा अज्र है।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُونَ ٥٩

59. (येह वोह लोग हैं) जिन्होंने सब्र किया और अपने रब पर ही तवक्कुल करते रहे।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا
اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ٦٠

60. और कितने ही जानवर हैं जो अपनी रोज़ी (अपने साथ) नहीं उठाए फिरते अल्लाह उन्हें भी रिज़्क़ अ़ता करता है और तुम्हें भी, और वोह खूब सुनने वाला जानने वाला है।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ٦١

61. और अगर आप इन (कुफ़्फ़ार) से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चाँद को किस ने ताबेअ़ फ़रमान बना दिया तो ज़रूर केह देंगे अल्लाहने, फिर वोह किधर उल्टे जा रहे हैं।

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ إِنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ٦٢

62. अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है, और जिस के लिए (चाहता है) तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ को खूब जाननेवाला है।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ
مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ

63. और अगर आप उन से पूछें कि आस्मानसे पानी किस ने उतारा फिर उस से ज़मीन को उस की मुर्दनी के बाद ह़यात (और ताज़गी) बख़्शी तो वोह ज़रूर केह देंगे कि अल्लाहने, आप फ़रमा दें : सारी ता'रीफें अल्लाह ही के लिए

لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع ٦ ١٢ ٢

हैं, बल्कि उन में से अक्सर (लोग) अ़क़्ल नहीं रखते।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ
لَعِبٌ ؕ وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ
الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. और (ऐ लोगो !) येह दुनिया की ज़िन्दगी खेल और तमाशे के सिवा कुछ नहीं है, और ह़क़ीक़त में आख़िरत का घर ही (सह़ीह़) ज़िन्दगी है। काश वोह लोग (येह राज़) जानते होते।

فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ
اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾ لا

65. फिर जब वोह कश्तीमें सवार होते हैं तो (मुश्किल वक़्त में बुतों को छोड़ कर) सिर्फ़ अल्लाह को उस के लिए (अपना) दीन ख़ालिस करते हुए पुकारते हैं, फिर जब अल्लाह उन्हें बचा कर ख़ुश्की तक पहुंचा देता है तो उस वक़्त वोह (दोबारह) शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۙ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۟ وقفة
فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. ताकि उस (ने'मते नजात) की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें अ़ता की और (कुफ़्र की ज़िन्दगी के ह़राम) फ़ाइदे उठाते रहें । पस वोह अ़नक़रीब (अपना अन्जाम) जान लेंगे।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا
وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ
اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ
يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67. और क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने ह़रमे (का'बा) को जाए अमान बना दिया है और उन के इर्दगिर्द के लोग उचक लिए जाते हैं तो क्या (फिर भी) वोह बातिल पर ईमान रखते और अल्लाह के एह़सान की नाशुक्री करते रहेंगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ
اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68. और उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे या ह़क़ को झुटला दे जब वोह उस के पास आ पहुंचे। क्या दोज़ख़ में काफ़िरों के लिए ठिकाना (मुक़र्रर) नहीं है।

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ
سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾ ع ٦ ١٣ ٣

69. और जो लोग हमारे ह़क़में जिहाद (और मुजाहिदा) करते हैं तो हम यक़ीनन उन्हें अपनी (तरफ़ सैर और वुसूल की) राहें दिखा देते हैं, और बेशक अल्लाह साहिबाने एह़सान को अपनी म-इय्यत से नवाज़ता है।

وقف لازم

रुकूआ़तुहा 6 | 30 सूरतुर रूम 84 | आयातुहा 60

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾

2. अह्ले रूम (फ़ारस से) मग़्लूब हो गए।

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾

3. नज़्दीक के मुल्क में, और वोह अपने मग़्लूब होने के बाद अ़नक़रीब ग़ालिब हो जाएंगे।

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٤﴾

4. चन्द ही साल में (या'नी दस साल से कम अ़र्से में), अम्र तो अल्लाह ही का है पहले (ग़ल्बए फ़ारस में) भी और बा'द (के ग़ल्बए रूम में) भी, और उस वक़्त अह्ले ईमान ख़ुश होंगे।

بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾

5. अल्लाह की मदद से, वोह जिसकी चाहता है मदद फ़रमाता है, और वोह ग़ालिब है महरबान है।

وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾

6. (येह तो) अल्लाह का वा'दा है, अल्लाह अपने वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾

7. वोह (तो) दुनिया की ज़ाहिरी ज़िन्दगी को (ही) जानते हैं और वोह लोग आख़िरत (की ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी) से ग़ाफ़िलो बेख़बर हैं।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۭ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ

8. क्या उन्होंने अपने मन में कभी ग़ौर नहीं किया कि अल्लाहने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है पैदा नहीं फ़रमाया मगर (निज़ामे) ह़क़ और मुक़र्ररह मुद्दत (के दौरानिये) के साथ,

وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ
رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ٨

और बेशक बहुत से लोग अपने रब की मुलाक़ात के मुन्किर हैं।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن
قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَ
أَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ
مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم
بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ٩

9. क्या उन लोगों ने ज़मीन में सैरो सय्याहत नहीं की ता कि वोह देख लेते कि उन लोगों का अन्जाम क्या हुवा जो उन से पहले थे, वोह लोग इन से ज़यादह ताक़तवर थे, और उन्होंने ज़मीन में ज़राअत की थी और उसे आबाद किया था, उस से कहीं बढ़ कर जिस क़दर उन्होंने ज़मीन को आबाद किया है, फिर उनके पास पैग़म्बर वाज़ेह निशानियां ले कर आए थे, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन वोह ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا
السُّوأَىٰ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ١٠

ع

10. फिर उन लोगों का अन्जाम बहुत बुरा हुवा जिन्होंने बुराई की इस लिए कि वोह अल्लाह की आयतोंको झुटलाते और उन का मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ
إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ١١

11. अल्लाह मख़्लूकको पेहली बार पैदा फ़रमाता है फिर (वोही) उसे दोबारह पैदा फ़रमाऐगा, फिर तुम उसीकी तरफ़ लौटाऐ जाओंगे।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
الْمُجْرِمُونَ ١٢

12. और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी तो मुजरिम लोग मायूस हो जाएंगे।

وَلَمْ يَكُن لَّهُم مِّن شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ
وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ١٣

13. और उन के (ख़ुदसाख़्ता) शरीकों में से उन के लिए सिफारिशी नहीं होंगे और वोह (बिलआख़िर) अपने शरीकों के (ही) मुन्किर हो जाएंगे।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ
يَتَفَرَّقُونَ ١٤

14. और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी उस दिन लोग (नफ़सा नफ़सी में) अलग अलग हो जाएंगे।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾

15. पस जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे तो वोह बाग़ाते जन्नत में खुशहालो मसरूर कर दिए जाएंगे।

وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ لِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾

16. और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को और आख़िरत की पेशी को झुटलाया तो येही लोग अ़ज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे।

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾

17. पस तुम लोग अल्लाहकी तस्बीह किया करो जब तुम शाम करो (या'नी मग़रिब और इ़शा के वक़्त) और जब तुम सुब्ह करो (या'नी फ़जर के वक़्त)।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾

18. और सारी ता'रीफें आस्मानों और ज़मीन में उसी के लिए हैं और (तुम तस्बीह़ किया करो) सेह पहर को भी (या'नी अ़सरके वक़्त) और जब तुम दोपहर करो (या'नी ज़ोहर के वक़्त)।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ ع ٢ ٩ ٥

19. वोही मुर्दह से ज़िन्दह को निकालता है और ज़िन्दह से मुर्दह को निकालता है और ज़मीन को उसकी मुर्दनी के बा'द ज़िन्दाहो शादाब फ़रमाता है, और तुम (भी) इसी तरह (क़बरों से) निकाले जाओगे।

وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَاۤ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. और येह उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान हो जो (ज़मीन में) फैले हुए हो।

وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَ جَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

21. और येह (भी) उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े पैदा किए ताकि तुम उन की तरफ़ सुकून पाओ और उस ने तुम्हारे दरमियान मुह़ब्बत और रह़मत पैदा कर दी, बेशक उस (निज़ामे तख़्लीक़) में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

22. और उस की निशानियों में से आस्मानों और ज़मीन

وَ اخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ
فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّلْعٰلِمِیْنَ ﴿۲۲﴾

की तख़्लीक़ (भी) है और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का इख़्तिलाफ़ (भी) है, बेशक उसमें अह्ले इ़ल्म (व तेहक़ीक़) के लिए निशानियां हैं।

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ
وَ ابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ
ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿۲۳﴾

23. और उस की निशानियों में से रात और दिन में तुम्हारा सोना और उस के फ़ज़्ल (या'नी रिज़्क़) को तुम्हारा तलाश करना (भी) है। बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो (ग़ौरसे) सुनते हैं।

وَ مِنْ اٰیٰتِهٖ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ
طَمَعًا وَّیُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَیُحْیٖ
بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِیْ
ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۴﴾

24. और उस की निशानियों में से येह (भी) है कि वोह तुम्हें डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आस्मान से (बारिश का) पानी उतारता है फिर उस से ज़मीन को उस की मुर्दनी के बाद ज़िन्दाहो शादाब कर देता है, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अ़क़्ल से काम लेते हैं।

وَ مِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَ
الْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ
دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖۗ اِذَاۤ اَنْتُمْ
تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾

25. और उस की निशानियों में से येह भी है कि आस्मानो ज़मीन उसके (निज़ामे) अम्र के साथ क़ाइम हैं फिर जब वोह तुमको ज़मीन से (निकलने के लिए) एक बार पुकारेगा तो तुम अचानक (बाहर) निकल आओगे।

وَلَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ
كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾

26. और जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब) उसी का है, सब उसी के इताअ़त गुज़ार हैं।

وَ هُوَ الَّذِیْ یَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ
یُعِیْدُهٗ وَ هُوَ اَهْوَنُ عَلَیْهِ ؕ وَ لَهُ
الْمَثَلُ الْاَعْلٰی فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۷﴾ ع ۳ ۸ ۶

27. और वोही है जो पेहली बार तख़्लीक़ करता है फिर उस का इआदह फ़रमाएगा और येह (दोबारह पैदा करना) उस पर बहुत आसान है। और आस्मानों और ज़मीन में सब से ऊंची शान उसी की है और वोह ग़ालिब है हिक्मतवाला है।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ

28. उस ने (नुक़्तए तौहीद समझाने के लिए) तुम्हारे लिए

هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ
مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ
فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ
اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾

तुम्हारी ज़ाती ज़िन्दगियों से एक मिसाल बयान फ़रमाई है के क्या जो (लौंडी, गुलाम) तुम्हारी मिल्क में हैं उस माल में जो हमने तुम्हें अ़ता किया है शराकतदार है, के तुम (सब) उस (मिलकियत) में बराबर हो जाओ। (मज़ीद येह के क्या) तुम उनसे उसी तरह डरते हो जिस तरह तुम्हें अपनोंका ख़ौफ़ होता है (नहीं) उसी तरह हम अ़क़्ल रखनेवालों के लिए निशानियां खोलकर बयान करते हैं (के अल्लाहका भी उसकी मख़्लूक़ में कोई शरीक नहीं है)।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ
اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾

29. बल्कि जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है वोह बग़ैर इ़ल्म (व हिदायत) की अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं, पस उस शख़्सको कौन हिदायत दे सक्ता है जिसे अल्लाहने गुमराह ठेहरा दिया हो और उन लोगों के लिए कोई मददगार नहीं है।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ
اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ
لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ ۙ

30. पस आप अपना रुख़ अल्लाह की इताअ़त के लिए कामिल यकसुई के साथ क़ाइम रखें। अल्लाहकी (बनाई हुई) फ़ितरत (इस्लाम) है जिस पर उसने लोगोंको पैदा फ़रमाया है (उसे इख़्तियार कर लो) अल्लाहकी पैदा कर्दह (सरिश्त) में तबदीली नहीं होगी, येह दीन मुस्तक़ीम है लेकिन अक्सर लोग (उन ह़क़ीक़तों को) नहीं जानते।

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۳۱﴾ ۙ

31. उसी की तरफ़ रुजूअ़ो इ़नाबत का ह़ाल रखो और उसका तक़्वा इख़्तियार करो और नमाज़ क़ाइम करो और मुशरिकों में से मत हो जाओ।

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا
شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ
فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾

32. उन (यहूदो नसारा) में से (भी न होना) जिन्होंने अपने दीनके टुकड़े टुकड़े कर डाला और वोह गिरोह दर गिरोह हो गए, हर गिरोह उसी (टुकड़े) पर इतराता है जो उसके पास है।

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ

33. और जब लोगोंको कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो वोह

مُّنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَآ أَذَاقَهُم مِّنْهُ
رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم بِرَبِّهِمْ
يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

अपने रबको उसकी तरफ़ रजूअ करते हुए पुकारते हैं, फिर जब वोह उनको अपनी जानिबसे रहमतसे लुत्फ़ अन्दोज़ फ़रमाता है तो फिर फ़ौरन उन में से कुछ लोग अपने रबके साथ शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوا بِمَآ ءَاتَيْنَٰهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

34. ताकि उस ने'मतकी नाशुक्री करें जो हमने उन्हें अ़ता की है पस तुम (चंद रोज़ह ज़िन्दगी के) फाइदे उठा लो, फिर अ़नक़रीब तुम (अपने अन्जामको) जान लोगे।

أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَٰنًا فَهُوَ
يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِۦ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

35. क्या हमने उन पर कोई (ऐसी) दलील उतारी है जो उन (बुतों) के ह़क़ में शहादतन कलाम करती हो जिन्हें वोह अल्लाहका शरीक बना रहे हैं।

وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ
وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾

36. और जब हम लोगों को रहमतसे लुत्फ अंदोज़ करते हैं तो वोह उससे खुश हो जाते हैं, और जब उन्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचती है उन (गुनाहों) के बाइ़स जो वोह पहले से कर चुके हैं तो वोह फौरन मायूस हो जाते हैं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ ٱللَّهَ يَبْسُطُ ٱلرِّزْقَ
لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ
لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

37. क्या उन्होंने नहीं देखा के अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादह फ़रमा देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं।

فَـَٔاتِ ذَا ٱلْقُرْبَىٰ حَقَّهُۥ وَٱلْمِسْكِينَ
وَٱبْنَ ٱلسَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ
يُرِيدُونَ وَجْهَ ٱللَّهِ ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ
ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

38. पस आप क़राबतदार को उस का ह़क़ अदा करते रहें और मोहताज और मुसाफ़िरको (उनका ह़क़), येह उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाहकी रज़ामन्दी के तालिब हैं, और वोही लोग मुराद पानेवाले हैं।

وَمَآ ءَاتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِىٓ
أَمْوَٰلِ ٱلنَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِندَ ٱللَّهِ ۖ

39. और जो माल तुम सूद पर देते हो ताकि (तुम्हारा असासा) लोगों के माल में मिल कर बढ़ता रहे तो वोह

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾

अल्लाहके नज़्दीक नहीं बढेगा और जो माल तुम ज़कात (व ख़ैरात) में देते हो (फ़क़त) अल्लाहकी रज़ा चाहते हुए तो वोही लोग (अपना माल इन्दल्लाह) कसरत से बढ़ानेवाले हैं।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ع ٤ ١٣ ٧

40. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर उसने तुम्हें रिज़्क़ बख़्शा फिर तुम्हें मौत देता है फिर तुम्हें जिन्दह फ़रमाएगा, क्या तुम्हारे (खुदसाख़्ता) शरीकों में से कोई ऐसा है जो उन (कामों) में से कुछ भी कर सके, वोह (अल्लाह) पाक है और उन चीज़ों से बरतर है जिन्हें वोह (उसका) शरीक ठेहराते हैं।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

41. बेहरो-बर में फ़साद उन (गुनाहों) के बाइस फैल गया है जो लोगों के हाथों ने कमा रखे हैं ताकि (अल्लाह) उन्हें बा'ज़ (बुरे) आ'मालका मज़ह चखा दे जो उन्होंने किए हैं, ताकि वोह बाज़ आ जाएं।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾

42. आप फ़रमा दीजिए कि तुम ज़मीनमें सैरो सय्याह़त किया करो फिर देखो पहले लोगोंका कैसा (इब्रतनाक) अन्जाम हुआ, उन में ज़यादह-तर मुशरिक थे।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾

43. सो आप अपना रुख़े (अनवर) सीधे दीन के लिए क़ाइम रखिए क़ब्ल उसके कि वोह दिन आ जाए जिस अल्लाहकी तरफ़ से (क़त्अ़न) नहीं फिरना है। उस दिन सब लोग जुदा जुदा हो जाएंगे।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ لا

44. जिसने कुफ़्र किया तो उसका (वबाले) कुफ़्र उसी पर है और जो नेक अ़मल करे सो येह लोग अपने लिए (जन्नत की) आरामगाहें दुरुस्त कर रहे हैं।

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

45. ताकि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे। बेशक वोह

काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता।

الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

46. और उसकी निशानियों में से येह (भी) है कि वोह (बारिश की) खुशख़बरी सुनानेवाली हवाओं को भेजता है ताकि तुम्हें (बारिशके समरातकी सूरत में) अपनी रह़मतसे बेहरा अंदोज़ फ़रमाए और ताकि (उन हवाओं के ज़रीए) जहाज़ (भी) उसके हुक्मसे चलें। और (येह सब) इस लिए है कि तुम उसका फ़ज़्ल (बसूरते ज़राअ़तो तिजारत) तलाश करो और शायद तुम (यूं) शुक्रगुज़ार हो जाओ।

وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّ لِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾

47. और दर ह़क़ीक़त हमने आपसे पहले रसूलों को उनकी क़ौमोंकी तरफ़ भेजा और वोह उनके पास वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए फिर हमने (तक्ज़ीब करने वाले) मुजरिमों से बदला ले लिया, और मोमिनों की मदद करना हमारे ज़िम्मए करम पर था (और है)।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَ كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾

48. अल्लाह ही है जो हवाओंको भेजता है तो वोह बादलको उभारती हैं फिर वोह उस (बादल) को फ़ज़ाए आस्मानी में जिस तरह चाहता है फैला देता है फ़िर उसे (मुतफ़र्रिक़) टुकड़े (कर के तेह ब तेह) कर देता है, फिर तुम देखते हो कि बारिश उस के दरमियान से निकलती है फिर जब उस (बारिश) को अपने बन्दों में से जिन्हें चाहता है पहुंचा देता है तो वोह फ़ौरन खुश हो जाते हैं।

اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَ يَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَاۤ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

49. अगरचे उन पर बारिश उतारे जाने से पहले वोह लोग मायूस हो रहे थे।

وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾

50. सो आप अल्लाहकी रह़मतके असरात की तरफ़ देखिए कि वोह किस तरह ज़मीन को उसकी मुर्दनी के बा'द ज़िन्दह फ़रमा देता है, बेशक वोह मुर्दों को (भी उसी तरह) ज़रूर ज़िन्दा करनेवाला है और वोह हर चीज़ पर ख़ूब क़ादिर है।

فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا
لَّظَلُّوا مِنْ بَعْدِهٖ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾

51. और अगर हम (खुश्क) हवा भेज दें और वोह (अपनी) खेतीको ज़र्द होता हुआ देख लें तो उसके बाद वोह (पेहली तमाम ने'मतों से) कुफ़्र करने लगेंगे।

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَآءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾

52. (ऐ ह़बीब!) बेशक आप न तो (इन काफ़िर) मुर्दों को अपनी पुकार सुनाते हैं और न (बदबख़्त) बेहरों को, जब कि वोह (आप ही से) पीठ फेरे जा रहे हों।

وَمَآ أَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ
ضَلٰلَتِهِمْ ؕ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ
بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾ ع

53. और न ही आप (उन) अंधों को (जो महरूमे बसीरत हैं) गुमराही से राहे हिदायत पर लानेवाले हैं, आप तो सिर्फ उन्हीं लोगों को (फ़हम और कु़बूलियत की तौफ़ीक़ के साथ) सुनाते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान ले आते हैं, सो वोही मुसलमान हैं (उनके सिवा किसी और को आप सुनाते ही नहीं हैं)।

ع ٥ ١٣ ٨

اَللّٰهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنْ ضَعْفٍ ثُمَّ
جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ
جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا
وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ
الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ﴿٥٤﴾

قرأ حفص بضم الضاد وفتحها في الثلاثة لكن الضم مختارة ١٢

54. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमज़ोर चीज़ (या'नी नुत्फ़े) से पैदा फ़रमाया फिर उसने कमज़ोरी के बाद कुव्वते (शबाब) पैदा की, फिर उसने कुव्वतके बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा पैदा कर दिया, वोह जो चाहता है पैदा फ़रमाता है और वोह खूब जाननेवाला, बड़ी कुदरत वाला है।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ
الْمُجْرِمُونَ ۙ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ
كَذٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ﴿٥٥﴾

55. और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी मुजरिम लोग क़समें खाएंगे कि वोह (दुनिया में) एक घड़ी के सिवा ठहरे ही नहीं थे, उसी तरह वोह (दुनिया में भी ह़क़से) फिरे रेहते थे।

★ यहां पर अल मौता (मुर्दों) और अस्सुम-म (बेहरों) से मुराद काफ़िर हैं. सहाबा व ताबिईन रदियल्लाहु अन्हुम से भी येही मा'ना मरवी है. मुख़्तलिफ तफ़ासीर से हवाले मुलाहिज़ा हों : तफ़सीरुत्तिबरी (12:20), तफ़सीर अल क़ुरतबी (232:13), तफ़सीर अल बग़्वी (428:3), ज़ादुल मसीर लि इब्निल जौज़ी (189:6), तफ़सीर इब्ने कसीर (439,375:3), तफ़सीरु लिल बाबिल अबी हिफ़्स अल हम्बली (126:16), अद्दुर्रुल मनसूर लिस्सियूती (376:6), और फ़त्हुल क़दीर लिश्शूकानी (150:4).

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. और जिन्हें इल्म और ईमानसे नवाज़ा गया है (उनसे) कहेंगे : दर ह़क़ीक़त तुम अल्लाह की किताब में (एक घड़ी नहीं बल्कि) उठने के दिन तक ठहरे रहे हो, सो येह है उठने का दिन, लेकिन तुम जानते ही न थे।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. पस उस दिन ज़ालिमोंको उनकी मा'ज़ेरत कोई फ़ाइदह न देगी और न ही उन से (अल्लाह को) राज़ी करनेका मुताल्बा किया जाएगा।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. और दर ह़क़ीक़त हमने लोगों (के समझने) के लिए इस क़ुरआन में हर तरहकी मिसाल बयान कर दी है, और अगर आप उनके पास कोई (ज़ाहिरी) निशानी ले आएं तब भी येह काफ़िर लोग ज़रूर (येही) केह देंगे कि आप महज़ बातिलो फरेबकार हैं।

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. इसी तरह अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मोहर लगा देता है जो (ह़क़्क़ को) नहीं जानते।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٦ ٩

60. पस आप सब्र कीजिए, बेशक अल्लाहका वा'दा सच्चा है, जो लोग य़क़ीन नहीं रखते कहीं (उनकी गुमराही का ग़म और हिदायतकी फ़िक्र) आप को कमज़ोर न कर दें। (ऐ जाने जहां उनके कुफ़्रको गमे जाँ न बना लें)।

रुकूआ़तुहा 4 | 31 सूरतु लुक़्मान मक्किय्यतुन 57 | आयातुहा 34

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ ج

1. अलिफ लाम मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۙ﴿۲﴾

2. येह हिक्मतवाली किताबकी आयतें हैं।

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ۙ﴿۳﴾

3. जो नेकूकारों के लिए हिदायत और रह़मत है।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾

4. जो लोग नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और वोह लोग जो आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

5. येही लोग अपने रबकी तरफ़से हिदायत पर हैं और येही लोग ही फ़लाह पानेवाले हैं।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۶﴾

6. और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो बेहूदा कलाम ख़रीदते हैं ताकि बिग़ैर सूझ बूझ के लोगोंको अल्लाह की राहसे भटका दें और उस (राह) का मज़ाक़ उड़ाएं, उन्ही लोगों के लिए रुस्वा कुन अ़ज़ाब है।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْۤ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۷﴾

7. और जब उस पर हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वोह ग़ुरूर करते हूए मुंह फेर लेता है गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में (बेहरेपन की) गरानी है, सो आप उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुना दें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۙ﴿۸﴾

8. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे उनके लिए ने'मतों की जन्नतें हैं।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۹﴾

9. (वोह) उनमें हमेशा रहेंगें, अल्लाहका वा'दा सच्चा है, और वोह ग़ालिब है हिक्मतवाला है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ اَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَ بَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ

10. उसने आस्मानों को बिग़ैर सुतूनों के बनाया (जैसा कि) तुम उन्हें देख रहे हो और उसने ज़मीनमें ऊंचे मज़बूत पहाड़ रख दिए ताकि तुम्हें ले कर (दौराने गर्दिश) न कांपे और उसने उसमें हर क़िस्म के जानवर फैला दिए, और

دَآبَّةٍ ؕ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿۱۰﴾

हमने आस्मानसे पानी उतारा और हमने उसमें हर क़िस्मकी उमदा-व-मुफ़ीद नबातात उगा दीं।

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۱﴾ ع ۱۱/۱۰

11. येह अल्लाहकी मख़्लूक़ है, पस (ऐ मुशरिको !) मुझे दिखाओ जो कुछ अल्लाहके सिवा दूसरोंने पैदा किया हो बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۱۲﴾

12. और बेशक हमने लुक़्मानको हिक्मतो दानाई अ़ता की, (और उससे फ़रमाया) कि अल्लाहका शुक्र अदा करो और जो शुक्र करता है वोह अपने ही फाइदे के लिए शुक्र करता है और जो नाशुक्री करता है तो बेशक अल्लाह बे नियाज़ है (खुद ही) सज़ावारे ह़म्द है।

وَ اِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَ هُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۳﴾

13. और (याद कीजिए) जब लुक़्माने अपने बेटे से कहा और वोह उसे नसीह़त कर रहा था, ऐ मेरे फ़रज़न्द ! अल्लाह के साथ शिर्क न करना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿۱۴﴾

14. और हमने इन्सानको उसके वालिदैन के बारे में (नेकी का) ताकीदी हुक्म फ़रमाया, जैसे उसकी मां तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ की ह़ालत में (अपने पेटमें) बरदाश्त करती रही और जिसका दूध छूटना भी दो साल में है (उसे येह हुक्म दिया) के तू मेरा (भी) शुक्र अदा कर और अपने वालिदैनका भी। तुझे मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है।

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

وَ اِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ صَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫

15. और अगर वोह दोनों तुझ पर इस बातकी कोशिश करें कि तू मेरे साथ उस चीज़को शरीक ठेहराए जिस (की ह़क़ीक़त) का तुझे कुछ इ़ल्म नहीं है तो उनकी इताअ़त न करना, और दुनिया (के कामों) में उनका अच्छे तरीक़े से साथ देना, और (अक़ीदा-व-उमूरे आख़िरतमें) उस

النصف

وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾

शख़्सकी पैरवी करना जिसने मेरी तरफ़ तौबा-व-ताअ़त का सुलूक इख़्तियार किया। फिर मेरी ही तरफ़ तुम्हें पलट कर आना है तो मैं तुम्हें उन कामों से बा ख़बर कर दूंगा जो तुम करते रहे थे।

يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾

16. (लुक़्मानने कहा :) ऐ मेरे फ़रजन्द ! अगर कोई चीज राईके दाने के बराबर हो, फिर ख़्वाह वोह किसी चट्टान में (छुपी) हो या आस्मानों में या ज़मीन में (तब भी) अल्लाह उसे (रोजे क़ियामत हिसाब के लिए) मौजूद कर देगा । बेशक अल्लाह बारीक बीन (भी) है आगाहो खबरदार (भी) है।

يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۚ ﴿١٧﴾

17. ऐ मेरे फरजन्द ! तू नमाज़ क़ाइम रख और नेकीका हुक्म दे और बुराई से मना' कर और जो तक्लीफ़ तुझे पहुंचे उस पर सब्र कर, बेशक येह बड़ी हिम्मत के काम हैं।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۚ ﴿١٨﴾

18. और लोगोंसे (ग़ुरूरके साथ) अपना रुख़ न फेर, और ज़मीन पर अकड़ कर मत चल, बेशक अल्लाह हर मुतकब्बिर, इतरा कर चलनेवाले को ना पसंद फ़रमाता है।

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾ ع ٢ ٨ ١١

19. और अपने चलने में मियाना रवी इख़्तियार कर, और अपनी आवाज़ को कुछ पस्त रखा कर, बेशक सबसे बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ وَ

20. (लोगो !) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाहने तुम्हारे लिए उन तमाम चीज़ों को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया है जो आस्मानोंमें हैं और जो ज़मीनमें हैं, और उसने अपनी ज़ाहिरी और बातिनी ने'मतें तुम पर पूरी कर दी हैं। और लोगों में कुछ ऐसे (भी) हैं जो अल्लाहके बारे में झगड़ा

مِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾

करते हैं बिग़ैर इल्म के और बिग़ैर हिदायत के और बिग़ैर रौशन किताब (की दलील) के।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ
يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾

21. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम उस (किताब) की पैरवी करो जो अल्लाहने नाज़िल फ़रमाई है तो केहते हैं (नहीं) बल्कि हम तो उस (तरीके) की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बापदादा को पाया, और अगरचे शैतान उन्हें अ़ज़ाबे दोज़ख़की तरफ़ ही बुलाता हो।

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ
وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾

22. जो शख़्स अपना रुख़े इताअ़त अल्लाहकी तरफ़ झुका दे और वोह (अपने अ़मल और ह़ालमें) साह़िबे ऐहसान भी हो तो उसने मज़बूत हल्क़ेको पुख़्तगीसे थाम लिया, और सब कामों का अंजाम अल्लाह ही की तरफ़ है।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ
اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا
عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾

23. और जो कुफ़्र करता है (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) उसका कुफ़्र आपको गमगीन न कर दे, उन्हें (भी) हमारी ही तरफ़ पलट कर आना है, हम उन्हें उन आ'माल से आगाह कर देंगे जो वोह करते रहे हैं, बेशक अल्लाह सीनों की (मुख़्फ़ी) बातों को ख़ूब जाननेवाला है।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى
عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾

24. हम उन्हें (दुनिया में) थोड़ा सा फ़ाइदा पहुंचाएंगे फिर हम उन्हें बेबस करके सख़्त अ़ज़ाबकी तरफ़ ले जाएंगे।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ
لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. और अगर आप उनसे दर्याफ़्त करें कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया। तो वोह ज़रूर केह देंगे कि अल्लाह ने, आप फ़रमा दीजिए : तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं बल्कि उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ

26. जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब) अल्लाह ही

اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾

का है, बेशक अल्लाह ही बेनियाज़ है (अज़ ख़ुद) सज़ावारे ह़म्द है।

وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّ الْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾

27. और अगर ज़मीनमें जितने दरख़्त हैं (सब) क़लम हों और समन्दर (रोशनाई हो) उसके बाद और सात समन्दर उसे बढ़ाते चले जाएं तो अल्लाह के कलिमात तब भी ख़त्म नहीं होंगे बेशक अल्लाह ग़ालिब है ह़िक्मतवाला है।

مَا خَلْقُكُمْ وَ لَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

28. तुम सबको पैदा करना और तुम सबको (मरने के बाद) उठाना (क़ुदरते इलाहिया के लिए) सिर्फ़ एक शख़्स (को पैदा करने और उठाने) की तरह है। बेशक अल्लाह सुननेवाला देखनेवाला है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ يُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ۙ كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّ اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾

29. क्या आपने नहीं देखा कि अल्लाह रातको दिन में दाख़िल फ़रमाता है और दिनको रातमें दाख़िल फ़रमाता है और (उसीने) सूरज और चांदको मुसख़्ख़र कर रखा है, हर कोई एक मुक़र्रर मीआ़द तक चल रहा है और येह कि अल्लाह उन (तमाम) कामों से जो तुम करते हो ख़बरदार है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾ ع ٣ ١١ ١٢

30. येह इस लिए कि अल्लाह ही ह़क़ है और जिनकी येह लोग अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं, वोह बातिल हैं और येह कि अल्लाह ही बुलंदो बाला, बड़ाईवाला है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾

31. क्या आपने नहीं देखा कि कश्तियां समन्दर में अल्लाहकी ने'मत से चलती हैं ताकि वोह तुम्हें अपनी कुछ निशानियां दिखा दे। बेशक उसमें हर बड़े साबिरो शाकिर के लिए निशानियां हैं।

وَ اِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا

32. और जब समन्दर की मौज (पहाड़ों, बादलों या

اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا
نَجّٰهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۭ وَ
مَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ
كَفُوْرٍ ﴿۳۲﴾

साइबानों की तरह उन पर छा जाती है तो वोह (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन) अल्लाह को उसी के लिए इताअ़त को ख़ालिस रखते हूए पुकारने लगते हैं, फिर जब वोह उन्हें बचा कर खुश्कीकी तरफ़ ले जाता है तो उनमें से चंद ही ए'तिदाल की राह (या'नी राहे हिदायत) पर चलनेवाले होते हैं, और हमारी आयतों का कोई इन्कार नहीं करता सिवाए हर बड़े अ़हद शिकन और बड़े ना शुक्र गुज़ार के।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا
يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَ
لَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ
اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ
الْغَرُوْرُ ﴿۳۳﴾

33. ऐ लोगो ! अपने रबसे डरो, और उस दिनसे डरो जिस दिन कोई बाप अपने बेटे की तरफ से बदला नहीं दे सकेगा और न कोई ऐसा फ़रज़न्द होगा जो अपने वालिद की तरफ़ से कुछ भी बदला देनेवाला हो, बेशक अल्लाहका वा'दा सच्चा है सो दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें हरगिज़ धोकेमें न डाल दे और न ही फरेब देनेवाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह के बारे में धोकेमें डाल दे।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ
يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَ يَعْلَمُ مَا فِي
الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا
تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَ مَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ
بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ
خَبِيْرٌ ﴿۳۴﴾ ع ۴ ۱۳

34. बेशक अल्लाह ही के पास क़ियामत का इल्म है, और वोही बारिश उतारता है, और जो कुछ रह़्मों में है वोह जानता है और कोई शख़्स येह नहीं जानता कि वोह कल क्या (अ़मल) कमाएगा और न कोई शख़्स येह जानता है के वोह किस सर ज़मीन पर मरेगा बेशक अल्लाह खूब जाननेवाला है, ख़बर रखनेवाला है, (या'नी अ़लीम बिज़्ज़ात है और ख़बीर लिल ग़ैर है, अज़ ख़ुद हर शय का इल्म रखता है और जिसे पसंद फ़रमाए बा ख़बर भी कर देता है)।

आयातुहा 30 | 32 सूरतुस सज्दति मक्किय्यतुन 75 | रुकूआ़तुहा 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾

1. अलिफ़ लाम मीम (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾ ؕ

2. इस किताब का उतारा जाना, इसमें कुछ शक नहीं कि तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾

3. क्या कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन येह केहते हैं कि इसे इस (रसूल ﷺ) ने गढ़ लिया है। बल्कि वोह आपके रबकी तरफ़से ह़क़ है ताकि आप उस कौमको डर सुनाएं जिनके पास आपसे पहले कोई डर सुनानेवाला नहीं आया ताकि वोह हिदायत पाएं।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا شَفِيْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾

4. अल्लाह ही है जिसने आस्मानों और ज़मीनको और जो कुछ उनके दरमियान है (उसे) छ दिनो (या'नी छ मुद्दतों) में पैदा फ़रमाया फिर (निज़ामे काइनात के) अर्शे (इक़्तिदार) पर क़ाइम हुवा, तुम्हारे लिए उसे छोड़ कर न कोई कारसाज़ है और न कोई सिफ़ारिशी, सो क्या तुम नसीह़त क़ुबूल नहीं करते ?

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾

5. वोह आस्मानसे ज़मीन तक (निज़ामे इक़्तिदार) की तदबीर फ़रमाता है फिर वोह अम्र उसकी तरफ़ एक दिन में चढ़ता है (और चढ़ेगा) जिसकी मिक़्दार एक हज़ार साल है उस (ह़िसाब) से जो तुम शुमार करते हो।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦﴾ ۙ

6. वोही ग़ैब और ज़ाहिर का जाननेवाला है, ग़ालिबो महरबान है।

الَّذِیْۤ اَحْسَنَ كُلَّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ وَ بَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِیْنٍ ۚ﴿۷﴾

7. वोही है जिसने ख़ूबी-व-हुस्न बख़्शा हर उस चीज़को जिसे उसने पैदा फ़रमाया और उसने इन्सानी तख़्लीक़ की इब्तिदा मिट्टी (या'नी गैरनामी माद्दे) से की।

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِیْنٍ ۚ﴿۸﴾

8. फिर उसकी नस्लको हक़ीर पानीके निचोड़ (या'नी नुत्फ़े) से चलाया।

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَ نَفَخَ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۹﴾

9. फिर उस (में आ'ज़ा) को दुरस्त किया और उसमें अपनी रूहे (हयात) फूंकी और तुम्हारे लिए (रहमे मादर ही में पहले) कान और (फिर) आँखें और (फिर) दिलो दिमाग़ बनाए, तुम बहुत ही कम शुक्र अदा करते हो।

وَ قَالُوْۤا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِی الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ جَدِیْدٍ ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآىِٕ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۰﴾

10. और कुफ़्फ़ार केहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल कर गुम हो जाएंगे तो (क्या) हम अज़ सरे नौ पैदाइशमें आएंगे, बल्कि वोह अपने रबसे मुलाक़ात ही के मुन्किर हैं।

قُلْ یَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِیْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ ع ۱۱/۱۴

11. आप फ़रमा दें कि मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है तुम्हारी रूह क़ब्ज करता है फिर तुम अपने रबकी तरफ़ लौटाए जाओगे।

وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَ سَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿۱۲﴾

12. और अगर आप दें (तो उन पर तअ़ज्जुब करें) कि जब मुजरिम लोग अपने रबके हुज़ूर सर झुकाए होंगे, (और कहेंगे) ऐ हमारे रब ! हमने देख लिया और हमने सुन लिया पस (अब) हमें (दुनिया में) वापस लौटा दे कि हम नेक अ़मल करलें बेशक हम यक़ीन करनेवाले हैं।

وَ لَوْ شِئْنَا لَاٰتَیْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَ لٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّیْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۳﴾

13. और अगर हम चाहते तो हम हर नफ़्स को उसकी हिदायत (अज़ ख़ुद ही) अ़ता कर देते लेकिन मेरी तरफ़से (येह) फ़रमान साबित हो चुका है कि मैं ज़रूर सब (मुन्किर) जिन्नात और इन्सानों से दोज़ख़ को भर दूंगा।

فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ
الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

14. पस (अब) तुम मज़ा चखो कि तुमने अपने उस दिनकी पेशी को भुला रखा था, बेशक हमने तुमको भुला दिया है और अपने उन आ'माल के बदले जो तुम करते रहे थे दाइमी अ़ज़ाब चखते रहो।

اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا
ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ السجدة

15. पस हमारी आयतों पर वोही लोग ईमान लाते हैं जिन्हें उन (आयतों) के ज़रीए़ नसीह़त की जाती है तो वोह सज्दह करते हूए गिर जाते हैं और अपने रबकी ह़म्द के साथ तस्बीह करते हैं और वोह तकब्बुर नहीं करते।

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۖ وَّمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾

16. उनके पहलू उनकी ख़्वाबगाहों से जुदा रेहते हैं और अपने रबको ख़ौफ़ और उम्मीद (की मिली जुली कैफ़ियत) से पुकारते हैं और हमारे अ़ता कर्दह रिज़्क़में से (हमारी राहमें) ख़र्च करते हैं।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ
قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾

17. सो किसी को मा'लूम नहीं जो आँखों की ठंडक उनके लिए पोशीदह रखी गई है, येह उन (आ'माले सालेह़ा) का बदला होगा जो वोह करते रहे थे।

اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ
فَاسِقًا ۭ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ وقف غفران

18. भला वोह शख़्स जो साह़िबे ईमान हो उसकी मिस्ल हो सक्ता है जो नाफ़रमान हो, (नहीं) येह (दोनों) बराबर नहीं हो सक्ते।

اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۭ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وقف غفران

19. चुनान्चे जो लोग ईमान लाए और नेक आ'माल करते रहे तो उनके लिए दाइमी सुकूनत के बाग़ात हैं (अल्लाह की तरफ़ से उनकी) ज़ियाफ़तो इकराम में उन (आ'माल) के बदले जो वोह करते रहे थे।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ
النَّارُ ۭ كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا
مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ

20. और जो लोग ना फ़रमान हुए सो उनका ठिकाना दोज़ख़ है। वोह जब भी उससे निकल भागनेका इरादा करेंगे तो उसीमें लौटा दिए जाएंगे और उनसे कहा जाएगा

ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾

के इस आतिशे दोज़ख़का अ़ज़ाब चखते रहो जिसे तुम झुटलाया करते थे।

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾

21. और हम उनको यक़ीनन (आख़िरत के) बड़े अ़ज़ाब से पहले क़रीबतर (दुन्यवी) अ़ज़ाब (का मज़ा) चखाएंगे ताकि वोह (कुफ़्र से) बाज़ आ जाएं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ٢ ١١ ١٥

22. और उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन हो सक्ता है जिसे उसके रबकी आयतों के ज़रीए नसीह़त की जाए फिर वोह उनसे मुंह फेर ले, बेशक हम मुजरिमों से बदला लेनेवाले हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾ ج

23. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब (तौरात) अता फ़रमाई तो आप उनकी मुलाक़ात की निस्बत शक में न रहें (वोह मुलाक़ात आपसे अ़नक़रीब शबे मे'राज होने वाली है) और हमने उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया।

وَ جَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. और हमने उनमें से जब वोह सब्र करते रहे कुछ इमामो पेशवा बना दिए जो हमारे हुक्म से हिदायत करते रहे, और वोह हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे।

اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. बेशक आपका रब ही उन लोगों के दरमियान क़ियामत के दिन उन (बातों) का फ़ैसला फ़रमा देगा जिन में वोह इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا

26. और क्या उन्हें (इस अम्रसे) हिदायत नहीं हुई कि हमने उनसे पहले कितनी ही उम्मतों को हलाक कर डाला था जिनकी रहाइशगाहों में (अब) येह लोग चलते फिरते

يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾

हैं। बेशक उसमें निशानियां हैं, तो क्या वोह सुनते नहीं हैं?

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٢٧﴾ ۩

27. और क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानीको बंजर ज़मीन की तरफ़ बहा ले जाते हैं, फिर हम उससे खेत निकालते हैं जिससे उनके चौपाए (भी) खाते हैं और वोह खुद भी खाते हैं, तो क्या वोह देखते नहीं हैं?

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٨﴾

28. और केहते हैं येह फ़ैसले (का दिन) कब होगा अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٢٩﴾

29. आप फ़रमा दें : फ़ैसले के दिन न काफ़िरों को उनका ईमान फ़ाइदा देगा और न ही उन्हें मोहलत दी जाएगी।

فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ ع ٣ ٨ ١٦

30. पस आप उनसे मुंह फेर लीजिए और इन्तिज़ार कीजिए और वोह लोग (भी) इन्तिज़ार कर रहे हैं।

आयातुहा 73 | 33 सूरतुल अह्ज़ाबि म-दनिय्यतुन 90 | रुकूआतुहा 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ् जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَ لَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١﴾ ۙ

1. ऐ नबी ! आप अल्लाह के तक़्वा पर (हस्बे साबिक़ इस्तिक़ामत से) क़ाइम रहें और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का (येह) केहना (कि हमारे साथ मज़हबी समझौता कर लें हरगिज़) न मानें, बेशक अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿٢﴾ ۙ

2. और आप उस (फ़रमान) की पैरवी जारी रखिए जो आपके पास आपके रबकी तरफ़से वही किया जाता है, बेशक अल्लाह उन कामों से ख़बरदार है जो तुम अंजाम देते हो।

وَّ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ
وَكِيْلًا ﴿٣﴾

3. और अल्लाह पर भरोसा (जारी) रखिए और अल्लाह ही कारसाज़ काफ़ी है।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ
جَوْفِهٖ ۚ وَ مَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓئِيْ
تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَ مَا
جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ
قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَقُوْلُ
الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ﴿٤﴾

4. अल्लाहने किसी आदमीके लिए उसके पेहलू में दो दिल नहीं बनाए, और उसने तुम्हारी बीवियों को जिन्हें तुम ज़िहार करते हूए मां केह देते हो तुम्हारी माएं नहीं बनाया, और न तुम्हारे मुंह बोले बेटोंको तुम्हारे (ह़क़ीक़ी) बेटे बनाया, येह सब तुम्हारे मुंहकी अपनी बातें हैं और अल्लाह हक़ बात फ़रमाता है और वोही (सीधा) रास्ता दिखाता है।

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ
فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ وَ
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ
بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥﴾

5. तुम उन (मुंह बोले बेटों) को उनके बाप (ही के नाम) से पुकारा करो, येही अल्लाहके नज़दीक ज़ियादह अ़द्ल है, फिर अगर तुम्हें उनके बाप मा'लूम न हों तो (वोह) दीन में तुम्हारे भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं। और इस बातमें तुम पर कोई गुनाह नहीं जो तुमने ग़लती से कही लेकिन (उस पर ज़रूर गुनाह होगा) जिसका इरादा तुम्हारे दिलोंने किया हो, और अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला बहुत रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ
اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا
الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ
كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى
اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي
الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٦﴾

6. येह नबिय्ये (मुकर्रम ﷺ) मोमिनों के साथ उनकी जानों से ज़ियादह करीब और ह़क़दार हैं और आपकी अज़्वाजे (मुतह्हरात) उनकी माएं हैं, और ख़ूनी रिश्तेदार अल्लाहकी किताबमें (दीगर) मोमिनीन और मुहाजिरीन की निस्बत (तक़्सीमे विरासत में) एक दूसरे के ज़ियादह ह़क़दार हैं सिवाए इसके कि तुम अपने दोस्तों पर एह्सान करना चाहो, येह हुक्म किताबे (इलाही) में लिखा हुआ है।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ
وَ مِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ
وَمُوْسٰى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَ
اَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ﴿۷﴾

7. और (ऐ ह़बीब ! याद कीजिए) जब हमने अंबिया से उन (की तबलीग़े रिसालत) का अ़हद लिया और (ख़ुसूसन) आपसे और नूह़ से और इब्राहीमसे और मूसा से और ईसा इब्ने मरयम (عليه السلام) से और हमने उनसे निहायत पुख़्ता अ़हद लिया।

لِّيَسْئَلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ
وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۸﴾ ع

8. ताकि (अल्लाह) सच्चों से उनके सच के बारे में दर्याफ़्त फ़रमाए और उसने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا
لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرًا ۚ﴿۹﴾

9. ऐ ईमानवालो ! अपने ऊपर अल्लाहका एह्सान याद करो जब (कुफ़्फ़ार की) फ़ौजें तुम पर आ पहुंचीं, तो हमने उन पर हवा और (फ़रिश्तों के) लश्करों को भेजा जिन्हें तुमने नहीं देखा, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे ख़ूब देखनेवाला है।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَ مِنْ
اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ
وَ بَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ تَظُنُّوْنَ
بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ﴿۱۰﴾

10. जब वोह (काफ़िर) तुम्हारे उपर (वादीकी बालाई मशरिक़ी जानिब) से और तुम्हारे नीचे (वादी की ज़ेरीं मग़रिबी जानिब) से चढ़ आए थे और जब (हैबतसे तुम्हारी) आँखें फिर गई थीं और (देहशत से तुम्हारे) दिल ह़लकूम तक आ पहुंचे थे और तुम (ख़ौफ़ो उम्मीदकी कैफ़िय्यत में) अल्लाहकी निस्बत मुख़्तलिफ़ गुमान करने लगे थे।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ زُلْزِلُوْا
زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿۱۱﴾

11. उस मुक़ाम पर मोमिनोंकी आज़माइशकी गई और उन्हें निहायत सख़्त झटके दिए गए।

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ
قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ

12. और जब मुनाफ़िक़ लोग और वोह लोग जिनके दिलों में (कमज़ोरिए अ़क़ीदा और शको शुबहकी) बीमारी थी, येह केहने लगे कि हमसे अल्लाह और उसके

وَرَسُولُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢﴾

रसूल ने सिर्फ़ धोके और फरेब के लिए (फ़तह़ का) वा'दा किया था।

وَ اِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ
يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ
وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ
يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ
بِعَوْرَةٍ ۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾

13. और जबकि उनमें से एक गिरोह केहने लगा : ऐ अह्ले यसरब ! तुम्हारे (बह़िफ़ाज़त) ठेहरनेकी कोई जगह नहीं रही, तुम वापस (घरोंको) चले जाओ और उनमें से एक गिरोह नबी (अकरम ﷺ)से येह केहते हुए (वापस जानेकी) इजाज़त मांगने लगा कि हमारे घर खुले पडे हैं, ह़ालां कि वोह खुले न थे, वोह (उस बहाने से) सिर्फ़ फ़रार चाहते थे।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا
ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَ مَا
تَلَبَّثُوْا بِهَآ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾

14. और अगर उन पर मदीनाके अतराफ़ो अक्नाफ़ से फ़ौजें दाख़िल कर दी जातीं फिर इन (निफ़ाक़ का अक़ीदा रखनेवालों) से फ़ित्नए (कुफ़्रो शिर्क) का सवाल किया जाता तो वोह उस (मुतालबे) को भी पूरा कर देते, और थोड़े से तवक़्क़ुफ़ केसिवा उसमें ताख़ीर न करते।

وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ
لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ
اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿١٥﴾

15. और बेशक उन्होंने उससे पहले अल्लाह से अ़हद कर रखा था के पीठ फेर कर न भागेंगे और अल्लाह से किए हुए अ़हद की (ज़रूर) बाज़पुर्स होगी।

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ
فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَ اِذًا
لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾

16. फ़रमा दीजिए : तुम्हें फ़रार हरगिज़ कोई नफ़ा' न देगा, अगर तुम मौत या क़त्ल से (डर कर) भागे हो तो तुम थोड़ी सी मुद्दत के सिवा (ज़िन्दगानी का) कोई फ़ाइदा न उठा सकोगे।

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ
رَحْمَةً ۚ وَ لَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾

17. फ़रमा दीजिए : कौन ऐसा शख़्स है जो तुम्हें अल्लाहसे बचा सक्ता है अगर वोह तक्लीफ़ देना चाहे या तुम पर रह़मतका इरादा फ़रमाए, और वोह अपने लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ पाएंगे और न कोई मददगार।

قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَ
الْقَآئِلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ
وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ ﴿١٨﴾
اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ
رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ
كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا
ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ
حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ
يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ
ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾
يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ
وَ اِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ
اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ
عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا
قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١٢ ١٨
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ
الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ؕ ﴿٢١﴾
وَ لَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ
قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

18. बेशक अल्लाह तुमसे उन लोगों को जानता है जो (रसूल ﷺ से और उनकी मइय्यत में जिहाद से) रोकते हैं और जो अपने भाइयों से केहते हैं कि हमारी तरफ़ आ जाओ और येह लोग लड़ाई में नहीं आते मगर बहुत ही कम।

19. तुम्हारे ह़क़में बख़ील हो कर (ऐसा करते हैं), फिर जब ख़ौफ़ (की ह़ालत) पेश आ जाए तो आप देखेंगे कि वोह आपकी तरफ़ तकते होंगे (और) उनकी आँखें उस शख़्स की तरह घूमती होंगी जिस पर मौतकी ग़शी तारी हो रही हो, फिर जब ख़ौफ़ जाता रहे तो तुम्हें तेज़ ज़बानों के साथ ता'ने देंगे (आज़ुर्दह करेंगे, उनका ह़ाल येह है कि) माले ग़नीमत पर बड़े ह़रीस हैं। येह लोग (ह़क़ीक़त में) ईमान ही नहीं लाए, सो अल्लाहने उनके आ'माल ज़ब्त कर लिए हैं और येह अल्लाह पर आसान था।

20. येह लोग (अभी तक येह) गुमान करते हैं कि काफ़िरों के लश्कर (वापस) नहीं गए और अगर वोह लश्कर (दोबारा) आ जाएं तो येह चाहेंगे कि काश! वोह देहातियों में जा कर बादिया नशीन हो जाएं (और) तुम्हारी खबरें दर्याफ़्त करते रहें, और अगर वोह तुम्हारे अंदर मौजूद हों तो भी बहुत ही कम लोगों के सिवा वोह जंग नहीं करेंगे।

21. फ़िल ह़क़ीक़त तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (ﷺ की ज़ात) में निहायत ही ह़सीन नमूनए (ह़यात) है हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह (से मिलने) की और यौमे आख़िरत की उम्मीद रखता है और अल्लाहका ज़िक्र कसरत से करता है।

22. और जब अह्ले ईमान ने (काफिरों के) लश्कर देखे तो बोल उठे कि येह है जिसका अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) ने हमसे वा'दा फ़रमाया था और अल्लाह और

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ
اِلَّاۤ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿۲۲﴾

उसके रसूल (ﷺ)ने सच फ़रमाया है सो इस (मन्ज़र) से उनके ईमान और इताअ़त गुजारी में इज़ाफ़ा ही हुआ।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا
عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى
نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا
بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾

23. मोमिनों में से (बहुतसे) मर्दों ने वोह बात सच कर दिखाई जिस पर उन्होंने अल्लाहसे अ़हद किया था, पस उनमें से कोई (तो शहादत पा कर) अपनी नज़र पूरी कर चुका है और उन में से कोई (अपनी बारी का) इन्तिज़ार कर रहा है, मगर उन्होंने (अपने अ़हदमें) ज़रा भी तब्दीली नहीं की।

لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ
وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ
اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۴﴾

24. (येह) इसलिए कि अल्लाह सच्चे लोगों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे तो अ़ज़ाब दे या उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा ले। बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला बड़ा रहम फ़रमानेवाला है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ
يَنَالُوْا خَيْرًا ۚ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ
الْقِتَالَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۵﴾

25. और अल्लाहने काफ़िरोंको उनके ग़ुस्सेकी जलन के साथ (मदीनासे ना मुराद) वापस लौटा दिया कि वोह कोई कामयाबी न पा सके, और अल्लाह ईमानवालों के लिए जंगे (अह़ज़ाब) में काफ़ी होगा, और अल्लाह बड़ी क़ुव्वतवाला इ़ज़्ज़तवाला है।

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ
اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَ
قَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا
تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿۲۶﴾

26. और (बनू क़ुरैज़ा के) जिन अह्ले किताबने उन (काफ़िरों) की मदद की थी अल्लाहने उन्हें (भी) उनके क़िल्अ़ों से उतार दिया और उनके दिलों में (इस्लामका) रो'ब डाल दिया तुम (उनमें से) एक गिरोह को (उनके जंगी जराइम की पादाशमें) क़त्ल करते हो और एक गिरोह को जंगी क़ैदी बनाते हो।

وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ۚ

27. और उसने तुम्हें उन (जंगी दुश्मनों) की ज़मीन का और उनके घरोंका और उनके अमवालका और उस (मफ़्तूह़ा) ज़मीन का जिसमें तुमने (पहले) क़दम भी न

ع ٣ ٧ ١٩

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾ ع

रखा था मालिक बना दिया और अल्लाह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ
كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ
زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَ
اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾

28. ऐ नबिय्ये (मुकर्रम !) अपनी अज़्वाज से फ़रमा दें कि अगर तुम दुनिया और उसकी ज़ीनतो आराइश की ख़्वाहिशमंद हो तो आओ मैं तुम्हें मालो मताअ़ दे दूं और तुम्हें हुस्ने सुलूक के साथ रुख़्सत कर दूं।

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ
لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

29. और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और दारे आख़िरतकी तलबगार हो तो बेशक अल्लाहने तुममें नेकूकार बीबियों के लिए बहुत बड़ा अज्र तैयार फ़रमा रखा है।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ
مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

30. ऐ अज़्वाजे नबिय्ये (मुकर्रम !) तुम में से कोई ज़ाहिरी मा'सियत की मुर्तकिब हो तो उस के लिए अ़ज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा और येह अल्लाह पर बहुत आसान है ।